बिहारी की मानव-जीवन सम्बन्धी गहन अनुभूति

बिहारी केवल राजदरबार के ही कवि न थे, अपितु उन्होंने समाज में रहकर मानव-जीवन का भी अत्यन्त निकट से अध्ययन किया था। बिहारी ने यह भली प्रकार देखा था कि समाज में मानव संसार के माया जाल में फँसकर किस प्रकार का जीवन व्यतीत करता है, उसे किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, वह किस तरह विषमताओं का शिकार होता है, उसे परिवार में कैसी-कैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, वह संसार के पचड़े में पड़कर किस तरह कष्ट झेलता है और उससे छूटने के जैसे-जैसे उपाय करता है वैसे ही वैसे और संसार में फँसता चला जाता है, उसका स्वभाव जैसा बन जाता है फिर उसे कोई बदल नहीं सकता और समाज में अच्छे मानवों का उतना सम्मान नहीं होता, जितना कि बुरे लोगों को महत्त्व दिया जाता है। साथ ही वह धन के लोभ में पड़कर किस तरह पागल सा बना रहता है। ऐसी-ऐसी अनेक बातों का निरूपण करके बिहारी ने अपने दोहों में मानव-जीवन सम्बन्धी गहन अनुभूतियों का चित्रण किया है।

प्रायः यह देखा जाता है कि मानव-जीवन अनेक जटिलताओं से भरा हुआ है। कभी उसे परिवार के संकट का सामना करना पड़ता है। कभी समाज का संकट उसे पीड़ा पहुँचाता है, कभी वह व्यक्तिगत कठिनाइयों से बेचैन रहता है और कभी वह दूसरों के द्वारा सताये जाने पर संतप्त रहता है। अतः जीवन में कठिनाइयों अथवा संकटों से संतृप्त होकर वह संसार को छोड़कर भागना चाहता है, परन्तु जितना-जितना संसार से भागने अथवा संकटों से छूटने की चेष्टायें करता है वह उतना ही उतना और संकटों में फँसता चला जाता है। बिहारी ने इसी तथ्य को जाल में फँसे हुए हिरन का उदाहरण देकर इस तरह उद्धृत किया है—

को छूट्यौ यह जाल परि, कत कुरंग अकुलात।
ज्यों-ज्यों सुरझि भज्यौ चहत, त्यों-त्यों उरझत जात।।

समाज में जो लोग नीच प्रकृति के होते हैं, दूसरों को सदैव सताया करते हैं, उन्हें पीड़ा पहुँचाया करते हैं, उन्हें भयभीत करके उनसे धन ऐंठा करते हैं अथवा बल प्रयोग करके दूसरों से चौथ वसूल किया करते हैं तथा लोगों को डराया-धमकाया करते हैं, उनसे डरकर समाज के लोग उनका सम्मान किया करते हैं, उनकी हर बात स्वीकार कर लेते हैं और उनको सदैव प्रसन्न रखने के लिए वे जो कुछ माँगते हैं उन्हें दे देते हैं। इसके विपरीत समाज में जो भले आदमी रहते हैं, किसी से कुछ नहीं कहते, किसी को कभी नहीं सताते तथा भलाई ही करते रहते हैं, ऐसे मनुष्यों को समाज में अधिक सम्मान नहीं मिलता, उनकी प्रायः उपेक्षा ही की जाती है, उनकी लोग चिंता नहीं करते और समाज में उनको अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता क्योंकि समाज को उनसे कोई भय नहीं होता और वे भी समाज में कुछ अलग-थलग से पड़ जाते हैं, जबकि दुर्जन एवं दुष्ट लोग समाज में पर्याप्त महत्त्व प्राप्त कर लेते हैं। बिहारी ने सामाजिक जीवन के इसी तथ्य को अपने निम्नलिखित दोहे में इस प्रकार व्यक्त किया है—

बसै बुराई जासु तनु, ताई कौ सनमानु।
भलौ भलौ कहि छोड़िये, खोटे ग्रह जपु दानु।।

समाज में कुछ मानव ऐसी नीच प्रकृति के होते हैं कि उन्हें सुधारने अथवा उनके स्वभाव को ठीक करने के लिए कितने ही उपाय क्यों न किये जायें परन्तु वे नहीं सुधरते, उनके स्वभाव में कुछ भी अंतर नहीं आता, वे अपनी दुष्टता का परित्याग नहीं करते, उनकी नीच प्रकृति जैसी की तैसी बनी रहती है और उनको कितनी ही सजा दी जाय, कितना ही ऊपर उठाने का प्रयास किया जाय, सब व्यर्थ सिद्ध होता है। इसके लिए बिहारी ने नल के पानी का उदाहरण दिया है कि नल के पानी को कितनी ही ऊँचाई तक बलपूर्वक पहुँचाया जाय, परन्तु वह फिर नीचे की ओर ही गिरता है—

कोटि जतनु कोऊ करौ, परै न प्रकृतिहि बीचु।
नल बल जल ऊँचौ चढ़ै, तऊ नीच कौ नीचु।।

बहुधा संसार में यह देखा जाता है कि जिसके पास अधिक धन हो जाता है, वह धन के नशे में चूर होकर किसी को कुछ नहीं समझता, वह पागल सा हो जाता है और धन के घमण्ड में मतवाला होकर अन्य लोगों के साथ ऐसा व्यवहार करने लगता है जैसा कि कोई नशीली वस्तु सेवन करने वाला नशेबाज उल्टा-सीधा व्यवहार किया करता है। बिहारी ने मानव-जीवन के इसी तथ्य को उजागर करते हुए धतूरे (कनक) से स्वर्ण या धन (कनक) की समता करते हुए कहा है कि धतूरे से स्वर्ण या धन में सौ गुनी मादकता होती है, क्योंकि धतूरे के खाने से ही व्यक्ति बौराया करता है, परन्तु स्वर्ण या धन के तो पाने से ही व्यक्ति बौराने लगता है अथवा पागलों की सी चेष्टा किया करता है—

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
वा खाये बौराय जग, या पाये बौराय।।

संसार के सभी कला प्रेमियों का यह अनुभव है कि यदि कोई व्यक्ति वीणा, सितार आदि तन्त्र वाद्यों की ध्वनि (तंत्री-नाद) में तल्लीन होकर उस ध्वनि की गहराई में डुबकी लगाता है तो उसे असीम आनन्द की प्राप्ति होती है, इसके विपरीत यदि इन वाद्य यन्त्रों की ध्वनि अनमना होकर सुनता है तो उसे कोई आनन्द नहीं आता। इसी तरह जो व्यक्ति किसी सरस कविता को पढ़कर या सुनकर उसमें वर्णित शृंगार, वीर आदि रसों की गहराई में निमग्न हो जाता है तो उसे कविता में वर्णित भावों के रसास्वादन में अत्यधिक आनन्द की उपलब्धि होती है और यदि कविता को मन लगाकर नहीं पढ़ता या सुनता तो उसे कोई आनन्द नहीं आता। इसी प्रकार जो व्यक्ति किसी सरस राग या रागिनी को सुनकर उसकी गहराई में डूब जाता है तो उसे उस राग या रागिनी में अत्यधिक आनन्द की प्राप्ति होती है जबकि उस राग या रागिनी में डुबकी न लगाकर केवल ऊपरी मन से सुनता है तब उसे कोई मजा नहीं आता। ऐसे ही जो व्यक्ति प्रेमपूर्वक रति-क्रीड़ा में सम्पूर्ण अंगों सहित निमग्न होकर हास-विलास सहित काम-क्रीड़ा में डुबकी लगाता है उसे अत्यधिक आनन्द की प्राप्ति होती है, जबकि जो व्यक्ति जोर जबर्दस्ती या बलपूर्वक काम-क्रीड़ा करता है, उसे उतना आनन्द प्राप्त नहीं होता। बिहारी ने मानवों की इसी गहन अनुभूति को अपने निम्नलिखित दोहे में इस प्रकार व्यक्त किया है कि तंत्री-नाद, कवित्त-रस, सरस राग और रति-रंग में जो डूब जाता है वह तो तर जाता अर्थात् अभीष्ट आनन्द प्राप्त कर लेता है और जो इनमें नहीं डूबता, वह डूब जाता है अर्थात् उसे अभीष्ट आनन्द की प्राप्ति नहीं होती–

तंत्री-नाद, कवित्त-रस, सरस राग, रति-रंग।
अनबूड़े, बूड़े, तरे जे बूड़े सब अंग।।

बहुधा यह देखा जाता है कि किसी-किसी परिवार में कोई देवर इतना निर्लज्ज, ढीठ और नीच स्वभाव का होता है कि वह अपनी भाभी को माता के समान न मानकर उसके साथ बुरा आचरण किया करता है और वह भाभी (कुल वधू) अपने देवर की इस नीचता अथवा दुश्चरित्रता को अपने पति या घर वाले से इसलिये नहीं कहती कि परिवार में झगड़ा होगा, आपस में द्वेष बढ़ेगा और घर में अशान्ति उत्पन्न हो जायेगी। इस कारण वह चुपचाप अपने देवर की नीचता अथवा दुश्चरित्रता को सहन करती रहती है और उसके विरुद्ध आवाज नहीं उठाती अपितु दिन-दिन सूखती जाती है। बिहारी ने इसी तथ्य को पिंजड़े में बंद तोते के समीप बैठी बिल्ली के कारण रात-दिन सूखते हुए तोते का उदाहरण देकर इस प्रकार कहा है–

कहति न देवर की कुबत कुल-तिय कलह डराति।
पंजरगत मंजार-ढिंग सुक ज्यों सूखति जाति।।

समाज में विद्यमान एक ऐसे वैद्य और उसकी पत्नी की अनुभूति का चित्रण करते हुए बिहारी ने संकेत किया है कि वैद्यजी स्वयं तो नपुंसक और निस्संतान हैं, परन्तु अपने पास आए हुए एक व्यक्ति को बहुत सा धन लेकर अहसान करके अपनी पास निर्मित औषधि की सराहना करते हैं कि इससे तुम्हें अवश्य संतान की प्राप्ति होगी और तुम्हारी नपुंसकता भी दूर हो जायेगी। वैद्यजी की ये बातें सुनकर उनकी पत्नी अपने पति के इस रहस्य को जानकर वैद्यजी के मुँह की ओर देखती हुई हँसने लगती है कि वे अपना तो इस औषधि से इलाज कर नहीं पाये हैं, जबकि दूसरे व्यक्ति को व्यर्थ में ठग रहे है–

कनक कनक से सौ गुनी मादकता अधिकाय।
या खाये बौराय जग, वा पाये बौराय।।

संसार के सभी कला प्रेमियों का यह अनुभव है कि यदि कोई व्यक्ति वीणा सितार आदि तन्त्र वाद्यों की ध्वनि (तंत्री-नाद) में तल्लीन होकर उस ध्वनि की गहराई में डुबकी लगाता है तो उसे असीम आनन्द की प्राप्ति होती है, इसके विपरीत यदि इन वाद्य यन्त्रों की ध्वनि अनमना होकर सुनता है तो उसे कोई आनन्द नहीं आता। इसी तरह जो व्यक्ति किसी सरस कविता को पढ़कर या सुनकर उसमें वर्णित शृंगार, वीर आदि रसों की गहराई में निमग्न हो जाता है तो उसे कविता में वर्णित भावों के रसास्वादन में अत्यधिक आनन्द की उपलब्धि होती है और यदि कविता को मन लगाकर नहीं पढ़ता या सुनता तो उसे कोई आनन्द नहीं आता। इसी प्रकार जो व्यक्ति किसी सरस राग या रागिनी को सुनकर उसकी गहराई में डूब जाता है तो उसे उस राग या रागिनी में अत्यधिक आनन्द की प्राप्ति होती है जबकि उस राग या रागिनी में डुबकी न लगाकर केवल ऊपरी मन से सुनता है तब उसे कोई मजा नहीं आता। ऐसे ही जो व्यक्ति प्रेमपूर्वक रति-क्रीड़ा में सम्पूर्ण अंगों सहित निमग्न होकर हास-विलास सहित काम-क्रीड़ा में डुबकी लगाता है उसे अत्यधिक आनन्द की प्राप्ति होती है, जबकि जो व्यक्ति जोर जबर्दस्ती या बलपूर्वक काम-क्रीड़ा करता है, उसे उतना आनन्द प्राप्त नहीं होता। बिहारी ने मानवों की इसी गहन अनुभूति को अपने निम्नलिखित दोहे में इस प्रकार व्यक्त किया है कि तंत्री-नाद, कवित्त-रस, सरस राग और रति-रंग में जो डूब जाता है वह तो तर जाता अर्थात् अभीष्ट आनन्द प्राप्त कर लेता है और जो इनमें नहीं डूबता, वह डूब जाता है अर्थात् उसे अभीष्ट आनन्द की प्राप्ति नहीं होती—

तंत्री-नाद, कवित्त-रस, सरस राग, रति-रंग।
अनबूड़े, बूड़े, तरे जे बूड़े सब अंग।।

बहुधा यह देखा जाता है कि किसी-किसी परिवार में कोई देवर इतना निर्लज्ज, ढीठ और नीच स्वभाव का होता है कि वह अपनी भाभी को माता के समान न मानकर उसके साथ बुरा आचरण किया करता है और वह भाभी (कुल वधू) अपने देवर की इस नीचता अथवा दुश्चरित्रता को अपने पति या घर वाले से इसलिये नहीं कहती कि परिवार में झगड़ा होगा, आपस में द्वेष बढ़ेगा और घर में अशान्ति उत्पन्न हो जायेगी। इस कारण वह चुपचाप अपने देवर की नीचता अथवा दुश्चरित्रता को सहन करती रहती है और उसके विरुद्ध आवाज नहीं

बहुधन लै अहसानु कै, पारो देत सराहि।
वैद-वधु हँसि भेद सों, रही नाह मुह चाहि।।

संसार में बहुधा यह देखा जाता है कि अनेक वेद-शास्त्रों का अध्ययन करने पर भी मानव-भवसागर से पार नहीं हो पाता है जबकि संसार से मुक्त पुरुषों का सत्संग करने पर वह भवसागर से पार होकर स्वर्ग प्राप्त कर लेता है। बिहारी ने इसी आशय को स्पष्ट करते हुए तरौना (कान का आभूषण) और बेसरि (नाक का आभूषण) दोनों के उदाहरण देकर कहा है कि रात-दिन कानों। (श्रुति) का समीप लाभ करते हुए भी तरौना नामक आभूषण अभी तक तरौना (भवसागर से तरा नहीं) ही रहा जबकि बेसरि ने मोतियों (मुक्त पुरुषों) का सत्संग करके नाक (स्वर्ग) का स्थान प्राप्त कर लिया है–

अजौं तरौना ही रह्यो, श्रुति सेवत एक अंग।
नाक-बास बेसरि लह्यौ, रहि मुक्तन के संग।।

बहुधा यह देखा जाता है कि संत पुरुष अथवा सज्जन व्यक्ति किसी संसार में लिप्त मनुष्य को अधिक दुखी देखकर यह कहा करते हैं कि तुम्हारे दुख दूर हो जायेंगे, तुम कुछ समय निकालकर भगवान का भजन किया करो और विषय वासना से दूर रहने की चेष्टा करो। परन्तु वह व्यक्ति भले ही कष्ट उठाता रहे परन्तु भगवान का भजन कभी नहीं करता, अपितु संसार के भजन में ही लिप्त रहता है अर्थात् भौतिक सुखों की चाह में विषयों में ही अधिक से अधिक लीन रहता है जबकि उनमें लिप्त रहने के कारण अधिकाधिक कष्ट ही झेलता रहता है। बिहारी ने मानवों की इसी प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हुए कहा है कि जिस भगवान का भजन करने के लिए कहा था उसे तो उस व्यक्ति ने एक बार नहीं भजा अपितु जिन विषय-वासनाओं से दूर भागने के लिए कहा था उनमें वह निरन्तर लिप्त रहा आता है–

भजन कह्यौ ताते भज्यौ, भज्यौ न एकौ बार।
दूर भजन जासों कह्यौ, सो तें भज्यौ गँवार।।

इसी प्रकार विषय-वासना में रात-दिन लिप्त रहने वाले मनुष्यों को समझाते हुए कोई संत या महापुरुष प्रायः कहा करते हैं कि देखो तुम यमराज (मृत्यु) के जबड़े के नीचे पडे हुए हो और रात-दिन विषय-वासना में लीन रहने के कारण कभी भी मृत्यु का ग्रास बन जाओगे। अतः भौतिक विषयों में लीन रहने की पिपासा को अब छोड़ दो और अपना जीवन सुधारने के लिए भगवान सिंह का गुणगान करते हुए उनका भजन किया करो, वे ही तुम्हारी रक्षा कर सकते हैं। बिहारी ने इसी तथ्य को इस प्रकार व्यक्त किया है कि मानव यमराज रूपी हाथी के जबड़ों में पड़ा हुआ है। अतः अब तुम धैर्य धारण करके विषयों की लालसा को छोड़ दो और नृसिंह रूपी सिंह का गुणगान करो, क्योंकि सिंह ही हाथी को मारकर तुम्हारी रक्षा कर सकता है–

जम करि मुँह नरहरि परयौ, इहि धरहरि चित लाउ।
विषय-तृष्णा परिहरि अजौ नरहरि के गुन गाउ।।

संसार के निरन्तर परिवर्तनशील रूप को देखकर प्रायः आध्यात्मिक दृष्टि वाले मनुष्यों को यह अनुभव हो जाता है कि यह संसार असार है, असत है और कच्चे कोंच के समान नष्ट होने वाला है। यदि यहाँ कोई सत या शाश्वत है तो वही एक परमात्मा है जिसका प्रतिबिम्ब संसार के सभी रूपों अथवा पदार्थों में दिखाई देता है। बिहारी ने इसी अनुभूति का चित्रण करते हुए एक सोरठे में लिखा है कि मैंने निश्चयपूर्वक यह समझ लिया है कि यह संसार

कच्चे काँच के समान क्षणभंगुर है। संसार में जितने भी रूप अथवा पदार्थ दिखाई देते हैं वे सभी उस एक परमात्मा के रूप की परछाईं हैं—

मैं समुझ्यौ निरधार, यह जग काँचों काँच सो।
एकै रूप अपार, प्रतिबिम्बित लखियतु जहाँ।।

इस प्रकार बिहारी ने मानव-जीवन की गहराई में प्रवेश करके अपने काव्य में उन अनुभूतियों का चित्रण किया है, जिनका उन्होंने स्वयं भी अनुभव किया है, अन्य व्यक्तियों से भी सुना है और समाज में चरितार्थ होते हुए भी देखा है। अतः इसमें कोई संदेह नहीं कि बिहारी के सतसई काव्य में मानव जीवन की तरल अनुभूतियों के अनेक चित्र अंकित हुए हैं, जिनमें आकर्षण है, सच्चाई है, गम्भीरता है और बिम्बात्मक सम्प्रेषणीयता भी है।